B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA
(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)
BA DEGREE-2
HISTORY (SUB./GEN.)
UNIT-5(B)
DEPARTMENT OF HISTORY
PANKAJ KR.MISHRA
DATE-24/09/2020

TOPIC- भारत छोड़ो आंदोलन(1942 ई.): एक समग्र अवलोकन

(QUIT INDIA MOVEMENT (1942 AD):A HOLISTIC OVERVIEW)

Part-1

Scanned with CamScanner

भारत छोड़ो आंदोलन : एक समग्र अवलोकन , भाग-1

क्रिप्स मिशन की असफलता ने देश को एक बार फिर क्रोध तथा निराशा की स्थिति में ला खड़ा किया। इस आग को हवा देने वाले तत्वों में ब्रिटिश सरकार की पाखंडता के अतिरिक्त कुछ अन्य तत्व भी थे। युद्ध के हालात दिन प्रतिदिन बिगड़ते जा रहे थे। 15 फरवरी को सिंगापुर, 7 मार्च को रंगून तथा 12 मार्च 1942 ई० को अंडमान पर जापान का कब्जा होने से भारत के आस-पास का समुद्री इलाका जापानी प्रभुत्व के अंतर्गत आ गया। त्रिंकोमाले से लेकर कलकत्ता के सारे पूर्वी तट पर भय का वातावरण फैल गया। मित्रराष्ट्रों की युद्ध में पराजय, पूर्वी एशिया तथा बर्मा से ब्रिटेन का पीछे हटना तथा असम-बर्मा सीमा से जख्मी सैनिकों से भरी रेलगाड़ियों के आगमन ने जापानी कब्जे का डर पैदा कर दिया। इसके अलावा कीमतों में वृद्धि तथा युद्ध के दौरान वस्तुओं की कमी के कारण जनता में असंतोष बढ़ रहा था। जापान के सामने ब्रिटिश पराजय के आसार ने इस असंतोष की सार्वजनिक अभिव्यक्ति में और वृद्धि कर दी।

हालांकि कांग्रेस ब्रिटेन तथा मित्रराष्ट्रों द्वारा युद्ध प्रयत्नों में किसी प्रकार की बाधा नहीं डालना चाहती थी परन्तु क्रिप्स मिशन की असफलता के बाद यह अनुभव किया जाने लगा कि इस विषय पर किसी प्रकार की चुप्पी का अर्थ होगा। ब्रिटेन को भारतीय इच्छाओं की परवाह किए बिना भारत के भविष्य का निर्णय करने का अधिकार देना। परंतु इस विषय पर विचारों में काफी विभिन्नता थी। क्रिप्स के साथ बातचीत में नेहरू की आखिरी क्षण तक कोशिश रही कि कोई ऐसा हल निकल आये जिससे भारत को प्रभावी ढंग से अपनी सुरक्षा करने का मौका मिल सके तथा युद्ध को जनता के युद्ध में बदला जा सके। इसके विपरीत मौलाना अबुल कलाम आजाद चाहते थे कि जापानी आक्रमण के विरुद्ध कांग्रेस जनता को संगठित करें तथा किसी प्रकार का अहिंसावादी आंदोलन प्रारंभ करने का विचार फिलहाल छोड़ दिया जाए। राजगोपालाचारी का विचार था कि कांग्रेस को मुस्लिम लीग की मांग मान लेनी चाहिए तथा प्रांतीय विधानमंडलों में लोकप्रिय सरकार दोबारा आरंभ करनी चाहिए। गांधी के अनुयायी अपने नेता के आदेशों का इंतजार कर रहे थे।

क्रिप्स मिशन की असफलता ने गांधी के लिए एक नैतिक संकट खड़ा कर दिया। उसके लिए विश्वयुद्ध एक नैतिक विवाद था- स्वतंत्रता एवं प्रजातंत्र बनाम तानाशाही एवं दासता के बीच संघर्ष। गांधी ने ब्रिटेन को स्वतंत्रता तथा प्रजातंत्र के प्रतीक के रूप में देखा परन्तु क्रिप्स ने उनकी आशाओं पर पानी फेर दिया जिसके कारण भारत के लोगों में ब्रिटेन के प्रति अविश्वास तथा शत्रुता का भाव आ गया था। अतः मुद्दा यह था कि ब्रिटेन को इस पाखंड के दाग से कैसे मुक्त किया जाए तथा भारत के लोगों की प्रतिष्ठा, आत्मविश्वास एवं एकता वापस लाई जाये। संक्षेप में, बुराई को अच्छाई में कैसे बदला जाए। 26 अप्रैल 1942 ई० को 'हरिजन' में एक लेख में गांधी ने लिखा "भारत को ईश्वर के भरोसे छोड़ दो या आधुनिक भाषा में कहा जाए तो इसे इसके हाल पर छोड़ दो। तब या तो विभिन्न दल आपस में कुत्तों की भांति लड़ेंगे; या यदि उन्हें असली जिम्मेदारी का अहसास होगा तो वे आपस में कोई तर्कपूर्ण समझौता कर लेंगे ---- भारत के लिए इसका परिणाम जो भी हो, इसकी तथा ब्रिटेन की वास्तविक सुरक्षा व्यवस्थित तथा सामयिक ब्रिटिश निष्कासन में है।"

Pankaj
24/9/2020

Scanned with CamScanner